

ਸ੍ਰੀ ॥ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ॥
ਪੰ ੬

[illegible]

॥ १ ॥ अलीढस्य साममलु ला ॥ अथ यत्र मा मृता दकन सान कुर्या ॥
 ॥ २ ॥ अथ यत्र मा मृता दकन सान कुर्या ॥
 ॥ ३ ॥ अथ यत्र मा मृता दकन सान कुर्या ॥
 ॥ ४ ॥ अथ यत्र मा मृता दकन सान कुर्या ॥
 ॥ ५ ॥ अथ यत्र मा मृता दकन सान कुर्या ॥
 ॥ ६ ॥ अथ यत्र मा मृता दकन सान कुर्या ॥
 ॥ ७ ॥ अथ यत्र मा मृता दकन सान कुर्या ॥
 ॥ ८ ॥ अथ यत्र मा मृता दकन सान कुर्या ॥
 ॥ ९ ॥ अथ यत्र मा मृता दकन सान कुर्या ॥
 ॥ १० ॥ अथ यत्र मा मृता दकन सान कुर्या ॥

य० ॥ रुमर्ष्य गङ्गादीय आकायूथ जलनेव यं अनादित्यं विष्णुः
 आयिनी नयनमानन्दं शुभं नयनं नयनसमतामायां रुद्रायां वीर्यं
 विष्णुः अथ यत्र मानन्दसमवसावर्हत्वा विसर्जय० ॥ ०० ति अन्तः
 यत्र सिकं यमा ॥ ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ गतावाक् कर्मकावय० ॥
 वरिष्ठं नयसीयादिकं रुद्रा ॥ नयनमावर्तु ॥ अथ अथ ॥ नन्दनः

भवतः ॥ **ॐ** मुखयथा ॥ **ॐ** सौम्यं यथा ॥ **ॐ** त्रिधा लयमयं यथा ॥
 ॥ नास्ति मातृ कलस्त्रिधा कलमधु विष्णु ध्यात्वा ॥ कानासु वै **ॐ** सं ध्यात्वा
 तद्वत्कार्येनमः ॥ मायायेनमः ॥ कलारूपं ध्यात्वा मायेनमः ॥ अक्षयेनमः ॥
 वैद्येनमः ॥ अस्वाया ॥ विष्णु कलयेनमः ॥ नादायेनमः ॥ निर्गुणायै नमः ॥ मूलः
 मनुन कलमधु कयिवा ॥ **ॐ** अकृष्णमूदयासूर्यमलु लतीर्थमावः **ॐ** सौमी

थमिषी कल ॥ **ॐ** अमृता इव श्रुतवर्षिणी अमृता धातयः अमृती कलानित्री कलता
 कलियदासीद **ॐ** अमृतं अमृतं मम स्यात् मूदयातीर्थमावः अमृतं मनुनसंसाध ॥
 अमूदया अमृती कल ॥ अमृतं मनुनसिषावः ॥ **ॐ** सफः आवर्ष ॥ **ॐ** ववानः कल
 नः ॥ अयस्त्रिभुवनसिषावः ॥ **ॐ** अयादि अमूकमासत्यादि ॥ मूलनुस
 वनिधानीमः ॥ तन्मा मूलमनु सफः मूदिसिषुयः ॥ तीव्रमाणयवासासिध

विधाया ॥ ततो रुसमधावर्णा ॥ ४२३ ॥ **ॐ ह्रीं** सिवाय नमः ॥ मूलनया लयाम ॥ **ॐ ह्रीं** ॥
सौं ४ लं वं वं यं ॥ तिरुमि वीऊन मूलन त्रिवरि मयु ति धावा मयु लि कृ टाया
गनना सासनी यनी त्वा ॥ **ॐ श्री यष्टुं रुट्टं ४** आसु यरुट्ट ॥ वरुणि वीया
ता उनि त्वा ॥ आवम्य ४ ततो र्सीधामावरु ० ॥ मूलमनुन कला कृत्वा र्सीधु त्वा ॥
वग्मवु ॥ मूलवायु वट्ट वरुं धा त्वा वरु त्वा ना सासु मिमलु लया तयि त्वा तद

रुवां न ठि युरा यूसु का क माला धा विर्णा वि नर्णा यी तालं काल वसर्ना वाल
वृषिनी त्वा ॥ **ॐ** शि युरा वा गध्वनी युज्या मि शि धार्थ मयु लि ३ ॥ वायु वग्म
यसी र्सीधु ॥ शि युरा यवी विमरु वायु वी ध्वनी धी मली तना वा विषवाठ
० ॥ **ॐ** तिया तर्सीधाम ॥ अथ मध्यान ॥ कभवु द्या दणदले कामवाजु मिति
वर्गवर्गु ॥ त्वा वरु त्वा ना सासु र्सीधु मयु लसम वासु तद रुवां वरु वरुं म्या

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ कर्तुं कामध्वनीं सञ्चरय ॥ **क्री** प्रियं
कामध्वनीं वृद्धयामि ॥ विष्णवे नमः ॥ कामध्वनीं गायत्रीं वृद्धयामि ॥
विष्णवे नमः ॥ कामिनीं ध्वनीं धीमतीं वृद्धयामि ॥ **४ क्री** त्रिपदा दया ॥ ॐ ति
मध्वनीं ॥ १ कादु ॥ धृष्टसु ॥ टिकसकाशी ॥ मूलमनु ॥ विडंसी ॥ त्रिपदा दया ॥
रनासक्तसाममलु ॥ तसमावाच ॥ तदुक्तं ॥ ध्वनीं वृद्धयामि ॥ जडादु ॥ दधं वा विनः

शुभं ॥ १ कादु ॥ धृष्टसु ॥ टिकसकाशी ॥ मूलमनु ॥ विडंसी ॥ त्रिपदा दया ॥
॥ सौ ४ मूत्राय विष्णवे नमः ॥ अमृतं धीं वृद्धयामि ॥ विष्णवे नमः ॥ मातृध्वनीं गायत्रीं वृद्धयामि ॥
॥ विष्णवे नमः ॥ कामिनीं ध्वनीं धीमतीं वृद्धयामि ॥ तन्नामृताणीयदा दया ॥ ॐ तिः
वयवः ॥ तन्नामृताणीयदा दया ॥ तन्नामृताणीयदा दया ॥ तन्नामृताणीयदा दया ॥
तन्नामृताणीयदा दया ॥ **॥ ४** तन्नामृताणीयदा दया ॥ तन्नामृताणीयदा दया ॥

त्रैलोक्यमादयत्रीविष्वक्कसदाधिव४ नृयानुममरुस्तेनयूयाकृतसूवावि
नी॥ वृत्तिगर्भेनैविधि॥ गतावालास्मर्तकृत्वा॥ वि. द्वा. धी. द्वा. द्वा. द्वा. म ४ मार्क
कुसेनवामयकाससहाकिसहितायनम४॥ कलिकलखकृतान्नवधुमा
रुष्टुसर्गनवजसकलकलालिर्जनसार्धियदागाणिदिवागममलूनार्त्विः
जनगायोरुर्ककृष्टमजलरुलार्थार्त्वाकलार्कनमामि॥ गताष्टरुमाठाः

रा४ यरुलीद्यावादियूजय७॥ ॥ राताजागमयुय॥ गत्वाश्रवमनादि
नैकत्वा॥ ॐ अयसर्वाकुअरुगाथरुगादुविसक्तिगा। यरुताविधिक्
र्तव्यजनस्यैवुशिवाकृया॥ ॐ सार्वभयससत्रायमूर्धनमुय ॐ रुद्रस्वाहाश्र
मुचरुद्र॥ यत्रैवागवयसोमशालणथनानकनिकान्॥ दिग्भस्त्रनत्वा॥ आस
नयुजा॥ आसनस्यभयूयस्कमविस्तृतकृदकुम्भायवता आसनऊयविनि

सर्वानुमानिदं देवाण्यसुखं विनीतिं वृत्तु १ स्वाहा ॥ इति प्रियं यथ ० ॥ अथ
न्यासः ॥ तामावाहं कृपयन् ॥ वदन् ध्याति स्वि स्वाहा धावस्तु या ॥ वै कलासना
यनमः ॥ यावस्तु यावत्तनमायुष्य ॥ वै क्रीं धीं धामवासिनेष्वोषट् ॥ रुवाणि
न्ये २ ॥ यातालवाणिनेनमः ॥ क्रीं क्रीं सोमः ४ सः ४ सः ४ आनन्दरुववायवो
षट् ॥ शिवालमालादयः ० ॥ गंधयुष्यादिकंदत्वात्तुलनात्मानं युजाय

कनकादिसंयुक्तः ॥ अथ न्यासः ॥ वै क्रीं सोमः ४ कनकुट्टि ॥ वै कलमूलं ॥ क्रीं कल
मा ॥ सोमः ४ कला ॥ सोमः ४ नासो ॥ क्रीं रुदिवं सिवसि ॥ ३ अथुष्टादिकनिष्कर्त
॥ ३ रुदयादिगुणुर्क ॥ तामावाहं न्यासः ॥ क्रीं धीं श्रीविद्युधीत्यानमः ॥ धनु
लियलितनगा ॥ न्यासः ॥ धनावरुं न्यासः ॥ क्रीं धीं अं अं १ ३ आदित्याय नमः ॥
रुदयः ॥ रुमः ॥ नयो ॥ रुदयाय वि ॥ वः ॥ शुक्रस्तनः ॥ नासो ॥ वक्रु ॥ या

सामनाह ॥ **ॐ** वा ददि ॥ **ॐ** वा कृदि ॥ **ॐ** वा दधन ॥ **ॐ** वा ताद ॥ तता ॥
 असनं न्यास ॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** ॥ प्रियत्रध्वश्रुमार्क वासनायनम ॥ वा दया ॥ **ॐ** **ॐ**
ॐ ॥ प्रियत्रेया राम्नासनायनम ॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** ॥ प्रियत्रवासिनी दद्यात्मासनाय
 नम ॥ **ॐ** **ॐ** ॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** ॥ प्रियत्राधीवकासनायनम ॥ **ॐ** **ॐ** ॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** ॥ प्रिय
 त्रमातृनी सर्वमनुसमायनम ॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** ॥ प्रियत्रासिद्धध्वनी साधुसि

दासनायनम ॥ मूलाध्व ॥ वृत्तिषणसर्नन्यास ॥ तथा वायु वन्यास ॥ तः
 ताद ॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** ॥ ददय ॥ नासो ॥ ग्राध्व ॥ वादे ॥ तथा मूलमनुन्यास
 ॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** ॥ वा वायु वश्रुत्रियक कामगिर्यालयधीमिशीनाथामिकधीका
 म ॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** ॥ वा वायु वश्रुत्रियक कामगिर्यालयधीमिशीनाथामिकधीका
 काम ॥ **ॐ** **ॐ** **ॐ** ॥ वा वायु वश्रुत्रियक कामगिर्यालयधीमिशीनाथामिकधीका

श्रीविष्णु सप्तकिंशीयादूकांयुजयामि॥ हृदि॥ नैऋतीं श्रीं गकि विरुमा
 मूर्ध्नि मित्रिणीं ॥ ० श्रीं डादिगनाभामिकं श्रीं रुगमं लिनीं दवीं श्रीं
 नमसकिंशीयादूकांयुजयामि॥ क्रम॥ ध्या॥ नैऋतीं श्रीं कुं कुं कुं श्रीं व
 क्रवकं डादिगनाभामिकं श्रीं मरुतिं यूरवसूदं श्रीं वीदवीः
 यूरवकां नमसकिंशीयादूकांयुजयामि॥ वक्रवन्ध॥ ॐ त्रिवरुं वीं ० न्याः

[illegible]

[illegible][illegible]

मामि॥ वूड द्वा वलन॥ गुरु॥ आ वसन॥ ज्ञान॥ यून वा वसनियं॥ वमु॥
वन्दन॥ वक्र वन्दन॥ सिन्दु व॥ ऊष्ण यवीत॥ यूषा॥ धूप॥ दीप॥ ने वय॥ नैः
आनन त्वाधियतं श्रीमरुपि यूनसून्द विगृह्यानु॥ श्री विद्या त्वाधियतं श्री
मरुपि यूनसून्द विगृह्यानु॥ सो॥ ४॥ शिव त्वाधियतं श्रीमरुपि यूनसून्द विगृह्या
नु॥ नैः श्री सो॥ ४॥ सर्व त्वाधियतं श्रीमरुपि यूनसून्द विगृह्यानु॥ विनू तर्थी

१० मुलमकुन॥ तत्ता गुरु वनयुजा॥ सन्निभ यय वदवी य वासुत वनयिथ
॥ गुरु स्तं प्रिय वान्दही यविवा चार्चनय॥ गुरु था रसनिया युजा॥ नैः श्री सो॥ ४॥
श्री कामत्री नित्या श्री यादू कां युज्यामि तर्थ्यामि॥ नैः श्री श्री श्री रुग्ममालिनी निः
त्या श्री यादू कां॥ नैः श्री श्री श्री नित्य किन्ना॥ नैः श्री श्री श्री रूग्म॥ नैः श्री श्री श्री वक्रिः
वक्रि वासिनी॥ नैः श्री श्री श्री मरुविशेष्वरी॥ नैः श्री श्री श्री शिवदूति॥ नैः श्री श्री श्री मुः

कौसिदि॥१००॥सदि॥१॥यादि सिदि॥१॥माकसिदि॥ततोवकावादि॥नें
कोष्टो॥१॥आ॥इकादीयवीअमिताभरेववसहितायधीयादूकायूऊयामि॥तथेयामि॥
१००॥००॥नारुयवीयवीनूरुनववसहितायधी॥१००॥कोमात्रीयवीयव
रेववसहितायधी॥१००॥वेयूवीयवीकाधरेववसहितायधी॥१००॥
वात्रादिदवीठनारुनववसहितायधी॥१००॥वृयनीयवीवायालीरेवव

सहितायधी॥१००॥वामूयवीसीववरेववसहितायधी॥नें॥कोष्टो॥
१००॥मलालदीयवीसंलानरेववसहितायधी॥॥नें॥कोष्टो॥
लाकनीमूडायवीधीयादूकायूऊयामि॥१००॥सर्वविद्यावनीमूडायवी॥
१००॥नमरेवरेवनीमूडायवी॥१००॥सर्वीनादिनिमूडायवी॥१००॥सर्वमली
कसामूडायवी॥१००॥सर्वविषयुमूडायवी॥१००॥सर्वशेवनीमूडायवी॥॥

ॐ सर्वबीजमुद्राय नमः ॥ **वैं द्रौं धौं** त्रयानीमुद्राय नमः ॥ ततो वक्रनायिका ॥ **ॐ**
ॐ धौं ॥ विष्णुयुद्धवीर्यकण्ठवीथीयादूकांयुजयामि ॥ तर्ह्ययामिनमः ॥ **दौं** ॥ सर्वसं-
स्तुतिमुद्राय नमः ॥ ॥ ततो वातसदलपद्माय नमः ॥ **वैं द्रौं धौं** ॥ कामाकर्ष-
णिनित्याकलाधीयादूकांयुजयामि ॥ तर्ह्ययामिनमः ॥ **ॐ** ॥ कृष्णाकर्षणीयः
वीथीयादूकांयुजयामि ॥ तर्ह्ययामिनमः ॥ **ॐ** ॥ शूलकालाकर्षणीयवीथी-

यादूकांयुजयामि ॥ तर्ह्ययामिनमः ॥ **ॐ** ॥ शूलकालाकर्षणीयवीथीयादूकांयुजयामि
॥ तर्ह्ययामिनमः ॥ **वैं द्रौं धौं** ॥ सार्धकर्षणीयवीथीयादूकांयुजयामिनमः ॥ तः
स्तुतिमुद्राय नमः ॥ **ॐ** ॥ वृषाकर्षणीयवीथीयादूकांयुजयामिनमः ॥ तर्ह्ययामिनमः ॥
ॐ ॥ मृगसाकर्षणीयवीथीयादूकांयुजयामिनमः ॥ तर्ह्ययामिनमः ॥ **ॐ** ॥ गन्धक-
र्षणीयवीथीयादूकांयुजयामिनमः ॥ तर्ह्ययामिनमः ॥ **ॐ** ॥ चित्राकर्षणीयवी-

ॐ किं धीयादू कांयू ऊयामिनम ॥ तय्ययामिनम ॥ १ सर्वा क र्थनी ॐ किं धीया
दू कांयू ऊयामिनम ॥ तय्ययामिनम ॥ १ सर्वा क्कादिनि ॐ किं धीयादू कांयू
ऊयामिनम ॥ तय्ययामिनम ॥ १ सर्व सभा रुनी ॐ किं धीयादू कांयू ऊयामि
नम ॥ तय्ययामिनम ॥ १ सर्व रु रुनी ॐ किं धीयादू कांयू ऊयामिनम ॥ तय्य
यामिनम ॥ १ सर्व व संक वी धीयादू कांयू ऊयामिनम ॥ तय्ययामिनम ॥ ॥

१ सर्व व ऊनि ॐ किं धीयादू कांयू ऊयामिनम ॥ तय्ययामिनम ॥ १ सर्वो ना
दिनी ॐ किं धीयादू कांयू ऊयामिनम ॥ तय्ययामिनम ॥ १ सर्वो र्थ साधनी ॐ
किं धीयादू कांयू ऊयामिनम ॥ तय्ययामिनम ॥ १ सर्व संय र्ति दूयी नी ॐ
किं धीयादू कांयू ऊयामिनम ॥ तय्ययामिनम ॥ १ सर्व म लु मपी ॐ किं धीयादू
कांयू ऊयामिनम ॥ तय्ययामिनम ॥ १ सर्व धी दू र्य क वि ॐ किं धीयादू कांयू ऊ

यामिनम ४॥ तर्ह्यामिनम ४॥ तमात्रयनायिका ॥ नैऋतं ॥ त्रियुगवासे
नीयकृष्ण वीथीयादूकीयुजयामिनम ४॥ तर्ह्यामिनम ४॥ वृ ॥ सर्ववर्णकृष्ण
मूर्धाद्वर्णयामि ३॥ तत्तावाक्यदसालवयुजय ७ ॥ मृगकानका लयवा नावक
नयुजय ७ ॥ नैऋतं ॥ सर्वसिद्धिप्रदाय वीथीयादूकीयुजयामिनम ४॥ तर्ह्या
यामिनम ४॥ ३ सर्वरूपकियायिनीयवाथी ॥ तर्ह्या ॥ ३ सर्वप्रियकियायिनीयवाथी ॥

ASHA ARCHIVES ३॥॥

॥ तथै ॥ १ सर्वसंस्तुतयिनीयवीधी ॥ तथै ॥ २ सर्वकामप्रदायनीयवीधी
॥ तथै ॥ ३ सर्वदुःखविनायवीधी ॥ तथै ॥ ४ सर्वमृत्युप्रसमनीयवीधी ॥ तथै ॥
५ सर्वविद्युविनाशनिधवीधी ॥ तथै ॥ ६ सर्वमैत्रसूचनीयवीधी ॥ तथै ॥ ७ स
र्वसौभाग्यदायनीयवीधी ॥ तथै ॥ ततोऽकनादिका ॥ ८ त्रियुगाधीव
क्रुष्ववीधीयादूकापूजयामिनमः ॥ तथै ॥ ततोऽनमः ॥ ९ ततोऽनमः ॥ ततोऽनमः ॥

वक्रायनमः ॥ १ सर्वसंस्तुतयिनीयवीधी ॥ तथै ॥ २ सर्वकामप्रदायनीयवीधी ॥ तथै ॥ ३ सर्व
दुःखविनायवीधी ॥ तथै ॥ ४ सर्वमृत्युप्रसमनीयवीधी ॥ तथै ॥ ५ सर्वविद्युविनाशनिधवीधी ॥ तथै ॥ ६ सर्वमैत्रसूचनीयवीधी ॥ तथै ॥ ७ स
र्वसौभाग्यदायनीयवीधी ॥ तथै ॥ ततोऽकनादिका ॥ ८ त्रियुगाधीव
क्रुष्ववीधीयादूकापूजयामिनमः ॥ तथै ॥ ततोऽनमः ॥ ९ ततोऽनमः ॥ ततोऽनमः ॥

१ यं **डां** धर्ममा रुनाय कामव यथा यथी ॥ तथ्य ॥ १ **डां** यं **डां** धर्ममा रुनाय का
मध्वनी वा या यथी ॥ तथ्य ॥ १ यं **डां** धर्ममा रुनाय कामध्वनी वा या य
थी ॥ तथ्य ॥ १ **डां** यं **डां** धर्ममा रुनाय कामध्वनी वा या यथी ॥ तथ्य ॥ १ यं
डां **डां** रुनाय कामध्वनी कृष्ण यथी ॥ तथ्य ॥ १ **डां** यं **डां** रुनाय
कामध्वनी कृष्ण यथी ॥ तथ्य ॥ व कु नायिका ॥ **यो** **यो** **यो** विपुना म्वा द वी वक

ध्वनी यथी ॥ तथ्य ॥ **यो** **यो** विपुना म्वा द वी वक ॥ तथ्य ॥ **यो** **यो** विपुना म्वा द वी वक ॥ तथ्य ॥
१ यं **डां** धर्ममा रुनाय कामध्वनी वा या यथी ॥ तथ्य ॥ १ यं **डां** धर्ममा रुनाय कामध्वनी वा या य
थी ॥ तथ्य ॥ १ **डां** यं **डां** धर्ममा रुनाय कामध्वनी वा या यथी ॥ तथ्य ॥ १ यं
डां **डां** रुनाय कामध्वनी कृष्ण यथी ॥ तथ्य ॥ १ **डां** यं **डां** रुनाय
कामध्वनी कृष्ण यथी ॥ तथ्य ॥ व कु नायिका ॥ **यो** **यो** **यो** विपुना म्वा द वी वक

[illegible]

प्रियं वन्दे नमो भूयाद् दूकान्तर्ययामि ॥ गता विच्छेदने वैद्य ॥ मूलमर्गनं कथय ॥
 श्वर्गकायाव ॥ आत्मनस्त्वविद्यातत्त्वविद्यतत्त्वमूखावयादा आद्यवयाय ॥
 धनं त्विन्द्राय मनयादाव ॥ क्षमा मुक्तियाय ॥ विसर्जनाय ॥ संज्ञानमूडा
 नस्यानन्दरूपलक्ष्मीवक्त्रसंज्ञाकायावनागुदाववाय ॥ नन्दं जगदभ्यमा
 त्सवहा ॥ धवद्वयसंलीनयाय ॥ सखिकाक्षयने वयं निर्मात्यास्यसः

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ लितागमि सर्ववर्षकनींद्रुद्र साक्षात् ॥ ॐ तिथीति
यूयसद्वनीनवावत्रययुजसखयमाशुसमार्य ॥ ॐ ॥

१ धनमाहकान्यास ॥ ॐ नमः ॥ कवानस ॥ ॐ नमः ॥
खालसः ॥ ॐ नमः ॥ ऊडाभिरवासः ॥ ॐ नमः ॥ खडाभिरवासः ॥ ॐ
नमः ॥ ऊडाकसधामः ॥ ॐ नमः ॥ खडाकसधामः ॥ ॐ नमः ॥
ऊडाकससः ॥ ॐ खवदकससः ॥ ॐ नमः ॥ ऊवदनालसः ॥ ॐ नमः ॥
खवदनालसः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ थुक्थुसिसः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ थुक्थुसि
नमः ॥

सःॐ नमः॥ थं थुवासः॥ ओं नमः॥ का थुवासः॥ ॐ नमः॥ ह्रूं नमः॥
॥ नमः॥ मसः॥ के नमः॥ जव लक य निसः॥ खं नमः॥ जव चूलाः॥ गं नमः॥
॥ जव क यिसः॥ घं नमः॥ जव य चिदसः॥ ङं नमः॥ जव य चिधासः॥ चं
नमः॥ रव लक य निसः॥ छं नमः॥ खव चूलासः॥ ङं नमः॥ खव क
यिसः॥ ञं नमः॥ खव य चिदसः॥ ॐ नमः॥ खव य चिधासः॥ टं नमः॥

जव
जव चू क लिसः॥ ॐ नमः॥ था ॐ नमः॥ जव नु ॐ नमः॥ ङं नमः॥
॥ जव य चिद हामः॥ एं नमः॥ जव य चिद धासः॥ ने नमः॥ खव य
क लिसः॥ थं नमः॥ खव था ॐ नमः॥ ङं नमः॥ खव नु ॐ नमः॥ ॐ नमः॥
खव य चिद हामः॥ ने नमः॥ खव य चिद धासः॥ घं नमः॥ जव य
कासः॥ रं नमः॥ खव य कासः॥ वं नमः॥ दं ग यिसः॥ रं नमः॥ म

ला० प्रस० म० नमः ४ तद्गुणः ॥ य० नमः ४ नृगलसः ॥ र० नमः ४ जव
वा० हा० प्रस० ल० नमः ४ खव वा० हा० प्रस० व० नमः ४ मिलरुवा० सः ॥ न०
म० ४ जव नृगल नयियः ॥ व० नमः ४ खव नृगल नयियः ॥ र० नमः ४ ज
व नृगल नयियः ॥ ह० नमः ४ खव नृगल नयियः ॥ ल० नमः ४ तद्गुणः ॥ न०
यः ॥ क० नमः ४ तद्गुणः ॥ ॥ थ० मि० मा० ट० का० न्या० सः ॥ ॥

२३ यति दिव्यमानाः ससमस्त ४२ वहा विद्याः त्वमव विष्णु विद्याः
 प्रथम दिव्यमानाः तत्सर्वं देवस्य गङ्गा तिलाक आनिष्ठा कुमाः यत्रा यत्र
 परात्मिका विविशतु य आनिष्ठाः ७७ श्रमयाह निष्ठाः तवात्सतु यकीर्तनः
 त्वत्तु नवद विविशः प्रजायते च आर्यं तत्त्वमवलीयते यूनः नवान्त्रकावि
 त्वा विनाः समर्थ आर्यं न युगु ॥ ॥

१ श्रीवलदेवताय नमः॥ नाहिय ॥ त्रैलोक्यं स्वध्यामि स्वाहा॥
कौविद्यातत्त्वं ध्यामि स्वाहा॥ सौ ॥ शिवतत्त्वं स्वध्यामि स्वाहा॥ ॥
दात्रा न करीन ॥ त्रैलोक्यं देवताय नमः॥ ब्रह्मनन्दाय नमः॥ त्रैलोक्यं
लोकिकमलासनाय नमः॥ दिगर्तधरा ॥ धर्मकन अदहाय नमः
यत्र गा. अ. उ. ता रु विर्मथिता, अहंता विद्वत्काल, कनस्यः

तुलिताय नमः॥ शिवतत्त्वं देवताय नमः॥ अखलमस्तु जाका
लं, आर्कं अनवलाचलं, तयदं दृष्टिर्जन, तस्मिन् श्रीगुरुदेव नमः॥
॥ त्रैलोक्यं, त्रैलोक्यं नमः॥ स्वर्गं गंगाय नमः॥ दधुर्ग, श्रीयत्र
देवताय नमः॥ मूलन, दधुर्ग, मयाय ॥ यं ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ धनाथमहि
वज्रयज्ञाय नमः॥ धवदुदय, यानयनि, दधुर्ग, त्रैलोक्यं ॥ १० ॥ मान

३ सौं कलकलविधित्थानमः ३

कान्यास ४॥ वरुणन्यास ४॥ रवौं न्यास ४॥ नैऋतगुह्यास ४॥ ह्रीं ग ३ः
नीसी २॥ सौं मधमासी २॥ नैऋतनामिकासी २॥ ह्रीं क विस्मिकासी
नमः १॥ नैऋतदयाय २॥ ह्रीं हिलहिसाहा ॥ सौं हिरवारया षट् ॥ नैऋत
मायय २॥ ह्रीं निगदयाय षट् ॥ सौं अस्माय रु १॥ हिलहिकर्तव्य ३
नैऋतसौं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीमहातियसु लु नी श्री पादकायू ३ यामिनय

यामिनमः ४॥ ह्रीं स्वर्वायूयाय ४॥ नैऋतमल्लायनमः ४॥ ह्रीं सुः
यम लुलायनमः ४॥ ह्रीं द्वादशकलामननमः ४॥ लं वथान ॥ थमनन
॥ गंगाययमननवैव ॥ गदावनिधनसुति नर्मदासिध्काय जी ३ लसि
नीनिधिकजू ४॥ कनन वंदनयनमः ३॥ नैऋतैवदवगायनमः
॥ वेगस्वाननय ॥ धन्यानिमूडाकन ॥ लं खनसमसुं हाय ४॥ थमनः

न नैति यजद विवी द्रहं क्री कामध्वजी धी महि ४। सौ त न्ना द वी यः
वा द या ग १॥ ॥ श्री या गु य डा ॥ व पु वी ध नाना य न म ॥ व ग स न य
न म ॥ ज न्ने त्रि म लु जा य न म ॥ श्री सूर्य म ॥ ज य द्वा द हा क ल मः
न न म ॥ श्री या गु य न म ४॥ ॥ अ द य स ध न या य ॥ म ल न स य ३॥
ल स न हा य ४॥ श्री ब्र ह्मा य रु ६ ॥ ता ल न ॥ नै क व या य दू ॥ अ ५

नं २

छ न य ५ मू डा क न ४॥ डां श्री क्री दू स ४ ध न शानि मू डा क न्य ॥ म च्छ
मू डा न ता क म य ४॥ म ल न १० ॥ नै अ म् अ म् ता रु व अ म् त व षि मि
क्री अ म् तै ५ व २ सा हा ४॥ ॥ या न न धान वि न्दू मू डा न सू द्धि काः
यो व धान्य ४॥ य क्का लु ख लु सै रु र्ग म ल ष न र्ग सै रु व ४॥ य दू वि र्ग म ल ष
गै यि य ष न मा व हं ४॥ सू द्धि त य गै सै सै सै नै न म ४॥ क न न्य ४॥

बुद्ध धर्मासनाय नमः ॥ ॐ ह्रीं स्वयं भगवता नमः ॥ ॐ सदा हि
व धर्मासनाय ॥ ॐ ह्रीं स्वयं भगवता नमः ॥ ॥ कच्छपिका मूढानः
आवाहनयाय ॥ माहायज्ञवज्रागच्छः काजलानन्दविग्रहः स
बहुगहिरमागच्छ हृदयजमध्यजा ॥ गिरिवर मूढान्महा
नशादावध ॥ ध्यानयाय ॥ वालाकुमलजाराभी चतुर्वादीणि

आचार्या ॥ यार्थं कलनजाचर्व धाजयन्तीति वाह ॥ ॥ देवधि
आवतय ॥ देवं हिरुकि सुलह यधिवान समविभ ॥ आ वल्यः
यूजय धामिताय ॥ वंसुमिजारुव ॥ ॐ मग महारि यन सुन्दः
नीदवा ॐ हा गच्छ १ ० ० ह गिद २ ३ ३ सधी जो कव ॥ धनायो न
व गिद ॥ ॐ ह्रीं ॥ कर्तव्य ॥ ॐ द मास द वी नमः ॥ स्वा

गर्गं १॥ समान याचके ४॥ यादृ १॥ अर्धनम ॥ अचमनि रं १॥ मधु
यर्क १॥ पुनश्चमनि १॥ सनान १॥ मृजुमनुनमान याचके ३४॥
कंग ४॥ वरुनम ॥ चन्दनम ॥ नकचन्द १॥ सिन्दूर १॥ अकं रं १॥
पूर्य १॥ धूर्य १॥ दिय १॥ नेवद १॥ न र्थन १॥ धातु जर्म १॥ ना
यानी मूदान मंमाल ४॥ यजमध्यजियाकं आह्लाका राय ॥ आ
गिया ३॥ लि ३॥

यस्य नदुगाया य ४॥ नैजी ४॥ अं का मध्वनी भाउ हा नि स्या ४॥ याः
दकी ४॥ नैजी ४॥ ध्या यजम धि मृजु ४॥ यादकी ४॥ नैजी ४॥ यजः
मृजु ४॥ यादकी ४॥ नैजी ४॥ ध्या मृजु ४॥ यादकी ४॥ नैजी ४॥ यजः
४॥ दवनाय ४॥ यादकी ४॥ नैजी ४॥ यक न था गिनि च पुन स न यी स
४॥ यादकी ४॥ नैजी ४॥ भाउ हा चक्र मुक या गिनी ४॥ यादका ४॥

नैकी श्री अष्टदलचक्रं गुकथागिनी श्री यादु की ॥ नैकी श्री चतु
दशमचक्रं संवदायथागिनि श्री यादु की ॥ नैकी श्री वहि देवमजः
चक्रं कूलकूलयागिनि श्री यादु की ॥ नैकी श्री अन्न देवमजसकनीः
यमर्हयागिनि श्री यादु की ॥ नैकी श्री अष्टाजसर्वनागरुसयागि
नि श्री यादु की ॥ नैकी श्री गि का लचक्र सर्वसिद्धि यजयागि नह

यथागिनि श्री यादु की ॥ नैकी श्री सर्वानन्दमयविन्दुचक्रयजयः
कस्वयनि श्री महाप्रियसूद नि श्री यादु की ॥ नैकी श्री नगायना
यजागि नहसयागिनि गनसर्वचक्रं श्री महा प्रियसूदनी
सर्वयात्रे ४ युजिता गनयिनासंनु ॥ ॥ नवमूदाकेन ॥ डौ डौ डौः
हूँ हूँ हूँ हूँ नै ॥ थं मलाकनी गिरा अरु सिद्धय ॥ ३ ॥ डौ डौ

४ श्रीसूर्याय नमः ३ सूर्याय नमः ॥ ॐ हस्तियि ४ ॥ विनिनमने स्वाहा ४ ॥ गल
सया ४ ॥ ॐ ईं स ३ ॥ हिवयाक ॥ ॐ कृष्णाय गविन्दाय गविन्दाय नमः
होय स्वाहा ४ ॥ कृष्णाय नमः ४ ॥ वेदोक्तं ४ ॥ वाजाय नमः ४ ॥ ॐ वेदोक्तं
३ ॥ यक्षदेवि ४ ॥ स्वस्ति ४ ॥ ॐ ईं जायते ३ ॥ ॐ ईं जायते ३ ॥
ॐ उग्र चण्डि निरुद्धोक्ति ३ ॥ सदानन्द १ ॥ मं ईं स ४ म स्वाहा

न स्वाहा ३ ॥ ॥ वलिविग ४ ॥ ॐ ईं श्री वां कृष्णाय नमः ३ ॥ स्वाहा ॥
॥ ॐ ईं श्री वां कृष्णाय नमः ३ ॥ स्वाहा ॥ ॐ ईं श्री वां कृष्णाय नमः ३ ॥
यवर्तिग ३ ॥ स्वाहा ४ ॥ ॐ ईं श्री वां कृष्णाय नमः ३ ॥ स्वाहा ४ ॥ ॐ ईं
॥ ॐ ईं श्री वां कृष्णाय नमः ३ ॥ स्वाहा ४ ॥ ॐ ईं श्री वां कृष्णाय नमः ३ ॥
विग ३ ॥ ॥ कृष्णाय नमः ४ ॥ वदका ४ ॥ सुना सर्वे सर्वसिद्धि विष्णय नमः

ममलानि यद्विपुष्टि वास्तु गुरु न्यसाद रा ॥ नाजावनमूढा यानिम
द्राकन्य ॥ क्वयं २ ॥ दिवं २ ॥ नैवेद्यनम ॥ मजन विना अति २ ॥ ॥
माता यज्ञा ॥ मा मात सहा माय कालागकि स्वयं यिजि ॥ चतुर्वर्गत्वयि धी
बुगमात्वं सिद्धी दातव ॥ ॥ अय १०८ ॥ अय स सर्व नयाय ॥ गुह्य
विगुह्य ॥ गुरु कुरु नास कुरु अयं ॥ सिद्धिरु वगु ममा न ॥ न्य

त्वसा दाय विष्णु ॥ लं खनम लुतव यक कदा था नय यगसा
नगय ॥ ॥ श्री ॥ अख लुम लुता कार्ज नृणा दि ॥ माया कुरुः
तनि कयाम कर्मणि कातिकला माहिति मार्त विवित्र या अयारुग
वदि दं विवित्रा हर्ष रवे गकि हर्ज वल्लर विनय विवा गवा दिनिह
नवि डी काहिति युनयन यज मिमाता को मानि मिमि ॥ आवाह

नैनानामि नैनानामि यऊनं विसर्जनं नानामि लीगति यम
मध्यति ॥ अंगुष्ठं नर्दनामि, त्वमवहाजर्दममः ॥ तस्मान्काजनहावन
जक्रमं यत्तु मध्यनि ॥ यः अमृदाननमस्काज ॥ दां दी कौं दू सं ॥
मलनगुल्ल ॥ विजयागिनियुता ॥ हाकि युता ॥ गत्य (ग) धन ॥
ने कौं ॥ सर्वं सर्वं प्रयतिर्वं स्वध्यामि साहा ॥ मारु क नाहायाय

विजयागि ॥ यागु स्याद, स्थान, कायाव, देव सक संन ॥ ने कौं ॥
मसर्ववृत्तार्थं लं रु वगु स्याहा ॥ हां ख कायावः साधवा साधवा कर्म
ऊद्यतावतिर्गं मम, तत्सर्वं रु गव स्यं व, गृहाना जाधर्नं मम ॥ सहान
मृदान, वलिदव, विसर्जनयाय ॥ गच्छ गच्छ यजस्तु नं, स्वस्तु नं यः
तममध्यनि, यगु वृत्त दयाद वा, नविन्दु यजर्म पदं ॥ देव, वज्रिषा

यथा स्वानक काया वनागुदाव वलिस गय ॥ थम च यथा ॥ यावत्
यावत् गर्जनायाय धनकाव थव यावत् गय ॥ नैयि गय कासन स्रुव
वय रुजनाहे जयामनु मरिः सन्निवृत्ता सनाथ ॥ यवतिरु निरुना लाव
यावत् रुमिडा दका यका सदैव्यातिरु गल सदिना साग्रा क गुगाला
याति नीया गश गुगा रुज रुज रव सला यावत् मग गयिवन्दु यिवन्दु दव

ना ४ सर्व समुद्र समक्षधिका ४ था गिन्य ४ र्थ गुया ला ४ व. शिव द ह व
 वरि ना ४ हा क था य ४ म द य ४ ॥ सना न ४ ख का य ४ ग म य
 रुज न म्मे दा स उ म न ४ ग ज व नि ४ व म नि ४ प ४ व ह न ग य ४ ये य न
 व द ली वा ज न सि ४ सिं ४ क ४ क ४ य ४ म नि ४ स ल स नि ४ तु र ४ नि ४ रि ४ व ४ क ४ ल ४ ला
 ४ दे ल ४ नि ४ र्थ ४ स्ना न स ह स का टि रु न द ४ श्री च क या दा द र्क ४ ॥ ॥

वलिवाय॥ वलिसकनन॥ नैनिर्मोत्यवासिन्यनमः॥ सूर्यसावि
शाय॥ कौनिलकर्मसंपूर्णनिमित्ताथेनकनकर्मसादिनीश्रीः
सूर्यागमनेशा अर्थेनमयष्टीनमः॥ ॐ निसूखमर्त्यनि समाक
॥ ६३८ ॥

॥ १॥ मालाधनयाय॥ मालायद्रवकासन
मयावदयायाय॥ थमकन ॐ सधाजानयवद्यामिसधाया

मायथेनमः॥ कलवधर्मवनहाय॥ ॐ अधाजशाथया
नशा धानधार्जगनरु॥ सर्वसर्वसर्वस्यानमस्तु नूद नूयथा
नमः॥ वन्दनाय अर्कगवर्धन॥ ॥ यथायाय॥ ॐ नन्यनूवा
वविग्रहः मन्त्रदवायर्द्धिमहिगर्भनूदयथादयान्॥ ॐ श्रीं श्रीं
श्रीं मालाया धाम ॐ हयाधाम जयमानाया जीव ॐ निसू







